संजीव

हिटलर और काली बिल्ली

कहानी

हिटलर और काली बिल्ली

संजीव

हिटलर और काली बिल्ली

वर्षों 'ना'-'ना' करने के बाद शिवानी ने अंतत: 'हाँ' कर दी थी। चालीस के क्रिटिकल मोड़ पर 'हाँ'! चलो, देर आयद दुरुस्त आयद।

पहली बार खुद को आईने के सामने खड़ा कर गौर से निहारा कुँवर वीरेन्द्र प्रताप ने - दूधिया गोराई, नुकीली नाक, चौड़ा मस्तक, लंबे कान! अंग-अंग सांचे में ढला हुआ- सुडौल और संतुलित। वैसे कद तनिक और उँचा होता, आंखें तनिक और नीली और नाक तनिक और नुकीली तो अच्छा होता। पंजों के बल उचके, उँगलियों से नाक को दबाया फिर आंखों को एक विशेष कोण से देखा तो नीली नज़र आई। खुश हो गए। उन्हें यकीन हो गया कि वे शुद्ध आर्य नस्ल के हैं और हल्का-फुलका-सा जो भी विचलन है, वह महज भौगोलिक है। अब रहीं पत्नी शिवानी, तो उन्होंने खुद ही देख-सुनकर उनका चयन किया था। हजारों में... न न ..... हजारों नहीं, लाखों में एक। विशुद्ध आर्य कन्या! ऐसे में उनकी भावी संतान का उनकी प्रत्याशाओं के अनुरूप न होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। यह सब सोचते हुए उन्होंने एक विजयी मुस्कान खुद के अक्स पर उछाल कर आंखें मटकायीं और अंगूठा तानकर जीत का संकेत देते हुए मगन मन पूछा - 'कहो, कब पधार रहे हो छोटे कुंवर साहब?'

यह पहला दिन था।

फिर दूसरा .....

फिर तीसरा .....

जब से शिवानी ने उन्हें यह शुभ संदेश दिया था, आईने के सामने खड़े होकर अपने भावी शिशु के रूप-रंग की कल्पना करना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया था।

वह अमेरिका के न्यू जर्सी इलाके में एक निजी फर्म के सी.ई.ओ. थे। शिवानी वहीं किसी बैंक में थीं। काम-लायक कुछ दौलत इकट्ठी हो गई तो वतन याद आया। और जब वतन याद आया तो वतन से दूर होने की वजह से कुछ ज्यादा ही वतनपरस्त होते गये - इसकी प्राचीन गरिमा, इसकी संस्कृति, भाषा, आचार-विचार सब... तर्कों पर रीझते-सीझते खुद को एक मुकाम तक ले ही आते और वह मुकाम होता - शुद्ध आर्य रक्त! आर्यों के बारे में चर्चा करना, उनका लिटरेचर जमा करना उनका प्रिय शगल बनता गया। हालांकि ऐसा करते हुए कभी-कभी चीज़ें किसी निश्चित निष्कर्ष पर न पहुँच पातीं, गड्ड-मड्ड हो जातीं।